International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 11 Issue 3, May-Jun, 2023, Impact Factor: 7.326

मनीषा कुलश्रेष्ठ के उपन्यास शिगाफ़ में राजनीतिक समस्याएं

मीना

सहायक प्रोफेसर (हिन्दी), राजकीय महिला महाविद्यालय बाढ़ड़ा, (चरखी दादरी)

राजनीति शब्द का अर्थ है "राजनीति सम्बन्धी ।" अंग्रेजी में राजनीति का अर्थ"Politics Relating to Politics"होता है। राजनीति को अविश्वास संदेह आदि से जुड़े एक ऐसे दुर्वचन की भांति समझा जाने लगा है जिसमें स्वार्थ, दिखावा, छलकपट आदि की दुर्गन्ध आती है। इसलिए कुछ लोग राजनीति को 'समझौता की तकनीकि का नाम देते है तो कुछ का मत है कि ये तो चीजों को संभव बनाने की कला है। कुछ लोग इसे शैतानो की अंतिम शरण स्थली मानते है। राजनीति से सम्बन्धित घटना, व्यक्ति, प्रसंग परिणाम आदि को राजनीतिक बोध के अन्तर्गत समाहित किया जाता है। राजनीति का अर्थ "राज्य की वह नीति जिसके अनुसार प्रजा का शासन तथा पालन-पोषण और अन्य राज्यों से व्यवहार है।"

मानक हिन्दी कोश में राजनीति के दो अर्थ दिये है- "वह नीति या पद्धति जिसके अनुसार किसी राज्य का प्रशासन किया जाता है या होता है। गुटों वर्गों आदि की पारस्परिक स्पर्धा बाली स्वार्थपूर्ण नीति।" डॉ हरदयाल जी का मत है- "कोई भी साहित्य अपनी समकालीन राजनीति से असम्पृक्त और अप्रभावित नहीं रह सकता। राजनीति अपने समय के साहित्य को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने का बराबर प्रयत्न
करती है।"

राजनीति का क्षेत्र व्यापक है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में राजनीतिक बोध के विविध आयाम परिलक्षित होते है। जिनका प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष सम्बन्ध व्यक्ति, समाज, राष्ट्र से होता है। राजनीति के विविध रूप के अन्तर्गत-जातिगत राजनीति स्वार्थ की राजनीति, अनैतिक और भ्रष्ट की राजनीति आदि है। मनीषा कुलश्रेष्ठ के उपन्यास में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से जुड़े हुए राजनीतिक बोध की यथास्थान अभिव्यक्ति हुई है। राजनीतिक बोध के विविध रूपों को लेखिका ने अपने उपन्यास में इस प्रकार से परिलक्षित किया है- जातिगत राजनीति :-

जो राजनीति जाति के आधार पर हो उसे जातिगत राजनीति कहते है। आधुनिक युग के लोग अपनी पार्टी को मजबूत बनाने के लिए जातिवाद को बढ़ावा देते है तथा देश में जाति को आधार

बनाकर दंगे-फसाद भी करवाते है। शिगाफ़ उपन्यास में इसी बात को दिखाया गया है। "हम एक मुसलमान राज्य में रहने वाले चन्द हिन्दू थे इसलिए हमें मुस्लिम राज्य कश्मीर से निकाल दिया गया।" जातिगत राजनीति से आम जनता बहुत परेशान होती है क्योंकि नेता लोग अपने स्वार्थ के कारण उनमें फूट डाल देते है अर्थात् अंग्रेजों की नीति अपनाते है- फूट डालो व राज करो की इस प्रकार से भारत देश के विभाजन का प्रमुख कारण राजनीति की चाल थी। जिसके फलस्वरूप हिन्दू व मुसलमानों में दंगे-फसाद हो गये है। इन दंगो के कारण लोगों को अनेक परेशानी उठानी पड़ी और लोगों में भाई-चारे की भावना लुप्त हो गई। "भारत के अल्पसंख्यक मुस्लिमों को

पाकिस्तान बनने की कोई खुशी नहीं हुई। साम्प्रदायिक राजनीति भारत और पाकिस्तान दोनों स्थलों पर अल्पसंख्यकों के लिए खतरा बनी रही।" शिगाफ़ उपन्यास में नीरज कहता है कि "जितना शोर राजनेताओं और बुद्धिजीवियों ने गोधराकांड के शिकार कुछ सौ लोगों के लिए मचाया है उसका आधा भी कश्मीर में मारे गए हजारों हिन्दुओं के लिए मचाया गया होता तो लगता कि हम भी अपने देश के अपने है विस्थापितों की पीड़ा का तो मैं यहाँ जिक्र करता ही नहीं, बल्कि उन्हें तो जाने दो। सच पूछो तो हमें देश की लिजलिजी नितियों के मारे हुए है। इसलिए कश्मीर पंडित, किसी राजनीतिक पार्टी पर भरोसा नहीं कर पाता है।"

जातिगत राजनीति के चलते व्यक्ति धार्मिक स्थलों पर भी लड़ता है। अर्थात् वहाँ भी दंगे-फसाद करने का प्रयास करता है। "रहमान अन्द लीब ईद की खरीददारी के लिए श्री नगर जा रहे थे, मगर रास्ते ही से लौटना पड़ा । चरार-ए-शरीफ दरगाह खाक हो गई। साथ ही सैकड़ो घर दरगाह पर हिजबुल के मुजाहिदीनों ने कब्जा कर लिया था. उस पर सिक्योरिटी फोर्स ने घेरा डाल के फायरिंग शुरू की। दो तरफा फायरिंग और ग्रेनेड हमलों ने कश्मीर के सुफियाना कल्चर की अमानता को खाफ कर दिया।" हमारे समाज में जातिगत संघर्ष को कुछ लोग ज्यादा बढ़ावा दे रहे है ताकि उनके स्वार्थ की पूर्ति हो सके। भारत और पाकिस्तान के बीच जो दूरियां नजर आ रही है उसका कारण जातिवाद ही है। जातिगत संघर्ष के कारण यास्मीन अपने अब्बु से पूछती है कि "कश्मीर की तारीख में ऐसा क्या हुआ कि इस अमन पसन्द तहजीब में हिन्दू और मुसलमान के रिश्तों में ये शिगाफ़ (दरार आ गया।"

स्वार्थ की राजनीति

आज की राजनीति स्वार्थाधारित है अपने नीजी स्वार्थ के लिए नेता निरीह राजनीति का प्रयोग समाज के लिए न करके अपने हितों की पूर्ति के लिए करता है उसे ही स्वार्थ की राजनीति कहते है। यूँ भी कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कूटनीतियों का सहारा ले, वह भी स्वार्थ की राजनीति होती है। हमारे समाज में चारों तरफ स्वार्थ की राजनीति व्याप्त है। शिगाफ उपन्यास में इसी बात को दिखाया गया है कि वसीम एक आंतकवादी है जो वादी में अमन की बात कर

रहा था। वह मानवाधिकारों की और निर्दोष मुसलमानों की नष्ट हो रही जिन्दगीयों की बात कर रहा था । वसीम एक अलगाववादी जो अहिंसा और शांति का पुजारी बनकर राजनेता बनने की चाह में मेमने की खाल ओढ़ आया था। जिसने अपने स्वार्थ के लिए 1990 से 1995 के बीच कई निहत्थे कश्मीरी हिन्दुओ को मारने का एक बड़ा स्कोर बनाया था। इस पर के०पी० के शब्दों में "वसीम के सिद्धान्तों की किताब में लिखा है कि मानवाधिकार सिर्फ कश्मीरी मुसलमानों के लिए हिन्दू तो अपनी जमीन से खदेड़ दिए या कत्ल कर दिए जाने के लिए है तो बन्द करो हिन्दू कश्मीरियों के वापस लौटने की वकालत ।" स्वार्थ में निहित व्यक्ति हमेशा अपना लाभ देखता है चाहे वह व्यापार हो, चाहे राजनीति हो। इसी स्वार्थ के कारण कुछ उग्रवादी संगठन बच्चों को उठाकर ले जाते है और अपने गुट में शामिल करते है। "ये बस दहशतगर्द है ये हमारे सरमाएदार नहीं है। ये हमारे नौजवान बच्चों को हमसे दूर ले जाते है। उन्हें ये अखबार, टीवी और समाज से अलग कर देते है, ताकि हकीकत से उनका दूर-दूर तक का वास्ता न रहे। जंगे आजादी के नाम पर उनके दिमाग साफ करते है। उनमें फितूर भरते है कि ऐसी जेहादी मौत से जन्नत नसीब होती है और जन्नत में हूरे ही हूरे मिलती है।" इसी स्वार्थ के चलते अब्दुल सुरक्षा और पैसों के लिए विदेशी आतंकवादी ग्रुप का साथ देना शुरू कर देता है।

हमारे समाज में भ्रष्टाचार इतना व्याप्त हो गया है कि इसे जड़ से निकालने के लिए सदियाँ लग जायेगी। भ्रष्ट लोगों के आगे नैतिकता व सदाचार की बात करना बेकार है क्योंकि वे अपने स्वार्थ के लिए दंगे, लूटमार, बम, धमाका, बलात्कार आदि करवाते है। स्वार्थ की राजनीति के चलते भ्रष्ट

लोग आम जनता में लड़ाई करवाते है ताकि उनके स्वार्थों की पूर्ति हो 3 फरवरी 1990 की घटना का वर्णन करते हुए यास्मीन कहती है कि, "सैकड़ो गैर-मुस्लिम लोग कुत्तों की तरह घेर लिए गए और शूट कर दिए गए। कश्मीर के अलगाववादी संगठन ने पुलिस और सेना के छक्के छुड़ा दिए है। सोई पड़ी बस्ती में आग लग जाने पर जैसे भगदड़ मचती है, वैसा ही कुछ मंजर देखा था मैंने जिधर सुनो उधर - जिधर देखो उधर हजारों की तादाद में हिन्दू शहर गांव-कस्बे छोड़ रहे थे बेशुमार मुसीबत गले में बांधकर अजाने, अनदेखे प्रदेशों की तरफ बढ़ रहे थे। दरिंदगी की आग तमाम आसपास की चीजों को लील रही है।" इस प्रकार से कह सकते है कि स्वार्थ की राजनीति ने आम जनता को टुकड़ों में बांट दिया है जो एक चिन्तन ही नहीं चिन्ता का विषय है।

अनैतिक व भ्रष्ट राजनीति

आज राजनीति अपना स्वच्छ रूप खो चुकी है। वह ऐसा अजगर बन चुका है जो अपने में ईमानदारी, नैतिकता, मानवता, व्यवस्था आदि सभी को पचा गया है। हमारे समाज में अनैतिक व भ्रष्ट राजनीति बहुत व्याप्त है और उसमें कुछ अच्छे लोग फंस जाते है जिनका निकल पाना बहुत कठिन

होता है। मनीषा कुलश्रेष्ठ ने अपने उपन्यास 'शिगाफ़ में अनैतिक व भ्रष्ट राजनीति को परिलक्षित किया है। रियाज कॉलेज के इम्तहानों की तैयारी कर रहा था। तभी चेहरे पर मास्क लगाए कुछ गैन मैन आकर दरवाजा खटखटाने लगे वे इखवानी थे। (काउटरइन सर्जेटस जो लोकल आर्मी के साथ काम करते हैं) उन्होंने रियाज के बारे में पूछा और ले गए। फिर वह लौटा ही नहीं। उन्होंने वादा किया था कि जल्दी ही रियाज को वापस कर देंगे। बाद में अरैस्ट करने को लेकर भी मुकर गए। रियाज के अब्बु ने सरकार के हर ऊँचे अफसर के दर की खाक छान ली मगर कुछ नहीं हुआ। आखिर में सरकार ने उसकी मौत का पर्चा जारी कर दिया और फायल बन्द कर दी क्या बताऐं, जब सेना शिनाख्त परेड कर रही थी तब मेरे सामने सत्तर साल का बूढ़ा अपने बेटे की लाश देखकर दिल के दौरे से मर गया। मगर मुझे बच्चे की लाश भी नहीं मिली। मैंने कोर्ट में केस फायल कर दिया लेकिन पिछले साल फरवरी में आर्मी मुझे पकड़कर ले गई और मुझसे लिखवा लिया कि मेरा बेटा आर्मी की कस्टडी में नहीं खोया है मैं कुछ नहीं कर सका। मैं भी इस भाग-दौड़ से निजात चाहता था।" अमिता आर्मी वालों की अनैतिक और भ्रष्ट राजनीति को उजागर करते हुए कहती है कि "मसलन निहत्थों जूलूसों पर गोलाबारी, दूसरे किस्म के शोषण शिनाख्त परेडों में पकड़कर ले जाना फिर टॉर्चर करना या थर्ड डिग्री देना वो भी बिना किसी जवाबदेही के मानो सारे हक उनके पास हो। ज्यादातर यूनिफार्म भी नहीं पहने होते थे । उनको पहचानना तक कठिन होता था कि आर्मी के है या पैरामिलिट्री ग्रुप के पुलिस के या कोई सिविलियन । उनके खिलाफ रिपोर्ट नहीं की जा सकती थी.

वे इतना जानते है कि उन्हें हिन्दुस्तान सरकार के आदेश है... यहाँ तैनाती के । स्वतन्त्रता के बाद समय के साथ राजनीति ने अपना स्वरूप बदल दिया है। आज राजनीति का अर्थ 'राज को प्राप्त करने की नीति मात्र बनकर रह गया है। सत्ता को पाने की कोशिश में स्वार्थ, विश्वासघात आदि का सहारा लिया जाता है। चुने जाने के बाद अगले चुनाव तक उनका कहीं अता-पता नहीं होता है। वर्तमान राजनीति ने राजनेताओं को व्यक्तिवादी बना दिया है। आज राजनीति का स्वरूप भ्रष्टता का पर्याय बन गया है। अनैतिक एवं चारित्रिक पतन की पराकाष्ठा राजनीति की उपज है। लोकतांत्रिक देश में चुनावों में मतदान का घटता प्रतिशत इसी बात का प्रभाव है कि आम आदमी राजनीति से घृणा करने लगा और इन्सान भी कम हो गया है। यदि देश ने इस अनैतिक व भ्रष्टाचार की राजनीति को समाप्त कर दिया तो हमारा देश उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता |अतः हम कह सकते है कि इस अनैतिक व भ्रष्ट राजनीति के दौर के कारण हमारे देश का पतन हो रहा है। लेखिका ने इसी कटु सत्य को अपने उपन्यास में परिलक्षित किया है।

नीति के ऊपर की राजनीति
नीति के ऊपर राजनीति का आंकलन करने से पहले नीति का अभिप्रायः
समझ लेना अतिआवश्यक है। ऐसा आचार व्यवहार जो सबकी दृष्टि में लोक या समाज के कल्याण के लिए

आवश्यक और उचित ठहराया गया हो या माना जाता हो। जीवन की सफलता की प्राप्ति के लिए रीति, किया, पद्धति, ढंग या भाव जो ले जाने या चलने में सहायक होता है वही नीति कहलाता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है :-
रघुकूल रीति सदा चलि आई।
प्राण जाये पर वचन न जाइये ।।

""रीति के पालन के परिणामस्वरूप ही राम को वनगमन करना पड़ा। जिसके फलस्वरूप अत्याचारी रावण का विनाश हुआ। आचार व्यवहार आदि का वह प्रकार या रूप जो बिना किसी का उपकार किए या किसी को कष्ट पहुँचाए अपने लिए भी दूसरों के लिए भी मंगलकारी शुभ तथा सम्मानजनक हो, उसे ही नीति कहते है।" इस प्रकार से हम कह सकते है कि अच्छे कामों की आड़ में बुरे काम करना था। अपने स्वार्थ को निकालने की प्रक्रिया ही नीति में राजनीति कहलाती है। शिगाफ़ उपन्यास में वसीम एक ईमानदार और श्रीनगर मेडिकल कॉलेज में विद्यार्थी था जो डॉक्टर बनना चाहता था। लेकिन कुछ लोगों के बहकावे में आकर वह मेडिकल की पढ़ाई छोड़ देता है तथा आतंकवादी बन जाता है। "मैं श्रीनगर मेडिकल कॉलेज में ही था जब मेरी मुलाकात अपने सीनियर अतहर से हुई। वह उग्रवादी संगठन के संपर्क में आया ही था । उसने मुझे एक पाकिस्तानी रिश्तेदार से मिलवाया जो खुद बेहद जहीन शख्स था । हार्वर्ड से मैनेजमेंट कर चुका था। उसने मुझे इस्लाम को लेकर वो वो तर्क दिए कि मैं चित हो गया। एक अलग इस्लामिक व...

इस्लाम बचाने के .... इस्लाम के मूल्लों को जिन्दा रखने के लिए उसने अपने साथ आने का आमन्त्रण दिया। कश्मीर की जन्नती फिजां को काफिरों से आजाद कराने की बात से वह मेरे मन में सुराख बनाता रहा। कश्मीर एक आजाद इस्लामिक मुल्क । 'इस्लाम को बचाओ..... कश्मीर को एक खुबसूरत इस्लामिक देश बनाओ। यह बात मेरे मन में गहरे पैठ गई थी।" नीति हमें अहिंसा के मार्ग पर चलकर सभी लोगों को मिलकर चलाना सिखाती है। जबकि नीति के ऊपर राजनीति हमें हिंसा का मार्ग दिखाती है। "बदलेगा नहीं.... चारों तरफ से पैसा कश्मीर की तरफ बह रहा है। आर्मी से सरकार से मिलिटेंसी से, सऊदी अरब से, एनजीओ से, आजकल यहाँ हर किसी ने दुकान खोली हुई है। यहाँ हर चीज बिक रही है। यतीमों की, मजलूम औरतों की, मिलिटेंट बनवाने की, पकड़वाने की उनसे मिलवाने की गुमशुदा लोगों की लिस्ट, मरे हुए लोगों का मातम और दर्द खरीद रहें है विदेशी कश्मीर अपनी जहालत दिखा-दिखाकर उसे बेच रहे है। कश्मीर में आजकल बस उनके यहाँ है, जो ऐसा कुछ नहीं बेच रहे है।" लेखिका ने अपने उपन्यास शिगाफ़ में नीति के ऊपर की राजनीति का चित्रण किया है।

इस प्रकार से स्वार्थ की राजनीति ने आमजनता को टुकड़ों में बांट दिया है जो एक चिन्तन ही नहीं

चिन्ता का विषय है। इस अनैतिक व भ्रष्ट राजनीति के दौर के कारण हमारे देश का पतन हो रहा है। आज का नेता अपने को सुरक्षित रखने के लिए दो सम्प्रदायों अथवा जातियों में दंगे

करवाने से भी नहीं चूकते है। राजनीति के सभी रूपों का चित्रण लेखिका ने बड़े ही सजीव ढंग से किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची ।

[1]. नालन्दा विशाल शब्द सागर, पृ० 1169
[2]. कैलाशचन्द्र भाटिया, हिन्दी–अंग्रेजी अभिव्यक्ति कोश, पृ0 265
[3]. नालन्दा विशाल शब्द सागर, पृ0 1169
[4]. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मानक हिन्दी कोश, पृ0 494
[5]. डॉ० हरदयाल, साहित्य और सामाजिक मूल्य, पृ0 37
[6]. मनीषा कुलश्रेष्ठ, शिगाफ़. पृ0 55
[7]. डॉ० मधु, महिला उपन्यासकार, पृ० 17
[8]. मनीषा कुलश्रेष्ठ, शिगाफ़. पृ0 72
[9]. मनीषा कुलश्रेष्ठ, शिगाफ. पृ0 97
[10]. मनीषा कुलश्रेष्ठ, शिगाफ़, पृ0 21,122
[11]. मनीषा कुलश्रेष्ठ, शिगाफ, पृ० 187
[12]. मनीषा कुलश्रेष्ठ, शिगाफ़. पृ0 96
[13]. मनीषा कुलश्रेष्ठ, शिगाफ, पृ0 167
[14]. रामचन्द्र वर्मा, बदरीनाथ कपूर, मानक हिन्दी कोश, पहला खण्ड, पृ0 313
[15]. मनीषा कुलश्रेष्ठ, शिगाफ. पृ0 122
[16]. मनीषा कुलश्रेष्ठ, शिगाफ, पृ0 85